जीवन के पश्चात के प्रश्नों के उत्तर देना

अनन्तकाल में अन्तर्दृष्टि

अनन्तकाल के बारे में सोचते हुए और यह कि जीवन के पश्चात क्या होगा बहुत से लोगों ने प्रश्न पूछे हैं जिनका मैं उत्तर देना चाहूँगा। अधिकांश पूछे गए प्रश्नों में से कुछ प्रश्न यह हैं जो मुझे भेजे गए हैं:

प्रश्न: पवित्र जन कौन थे? क्या वे यीशु को जानते थे और उसके पीछे चलनेवाले थे? क्या वे ऐसे मनुष्य थे जो यीशु के पृथ्वी पर चलने-फिरने से पहले मर गए थे?

यह प्रश्न वचन के उस भाग से हैं जहाँ उन पवित्र जन के बारे में बताया गया है जो मसीह की मृत्यु पर अपने कब्रों से बाहर निकल आए थे।

> और कब्रें खुल गईं। बहुत से पवित्र लोगों के शरीर जो मर चुके थे जीवित हो उठे। मसीह के पुनरुत्थान के बाद वे कब्रों से बाहर आए और पवित्र नगर में गए और बहुत से लोगों को दिखाए दिए। (मत्ती २७:५२-५३)

ये पवित्र लोग कौन थे? उत्पत्ति की पुस्तक की शुरुआत से ही, बिलकुल आदम और हव्वा के पाप के बाद से हम यह देखते है कि प्रभु प्रकट करता है कि बलिदान के द्वारा ही छुटकारा और पाप से बचाया जाना है। यहोवा परमेश्वर ने आदम और उसकी पत्नी के लिए चमड़े के वस्त्र बनाए और उनको पहनाए। (उत्पत्ती ३:२१) एक पशु को बलि किया जाना था आदम और हव्वा को ढाँकने के लिए क्योंकि अब वे नग्न थे और परमेश्वर से छिप रहे थे। पाप परमेश्वर और मनुष्य के बीच में एक दीवार खड़ी कर देता है। केवल उनके लिए दी गयी एक बलिदानी मृत्यु द्वारा मनुष्य परमेश्वर के पास आ सकता है। “क्योंकि एक प्राणी का जीवन उसके लहू में है और इसे मैंने तुमको दे दिया है कि तुम वेदी पर अपने लिए पश्चाताप करो; यह लहू है जो किसी के जीवन के लिए पश्चाताप करता है।” (लैव्यवस्था १७:११) पुराने नियम में, हम देखते हैं कि यरुशलेम में परमेश्वर के मन्दिर में एक बलिदान का तरीका तैयार किया गया। इब्रानियों की पत्री का लिखनेवाला यह कहते हुए कि बिना लहू बहाए पापों की कोई क्षमा नहीं है पुराने नियम की बलिदानी प्राणाली के विषय में बात करता है:

> 21 और इसी रीति से उस ने तम्बू और सेवा के सारे सामान पर लोहू छिड़का। 22 और व्यवस्था के अनुसार प्राय: सब वस्तुएं लोहू के द्वारा शुद्ध की जाती हैं; और बिना लोहू बहाए क्षमा नहीं होती॥ 23 इसलिये अवश्य है, कि स्वर्ग में की वस्तुओं के प्रतिरूप इन

> के द्वारा शुद्ध किए जाएं; पर स्वर्ग में की वस्तुएं आप इन से उत्तम बलिदानों के द्वारा। (इब्रानियों ९:२१-२३)

मसीह के आने से पहले, पुराने नियम के विश्वासी एक बलिदानी पशु के साथ परमेश्वर के पास आते थे। हालांकि यह केवल एक संकेत था कि मसीह की बलिदानी मृत्यु द्वारा परमेश्वर स्वयं आकर उनके पाप उठा लेगा।

> 1 क्योंकि व्यवस्था जिस में आने वाली अच्छी वस्तुओं का प्रतिबिम्ब है, पर उन का असली स्वरूप नहीं, इसलिये उन एक ही प्रकार के बलिदानों के द्वारा, जो प्रति वर्ष अचूक चढ़ाए जाते हैं, पास आने वालों को कदापि सिद्ध नहीं कर सकतीं। 2 नहीं तो उन का चढ़ाना बन्द क्यों न हो जाता? इसलिये कि जब सेवा करने वाले एक ही बार शुद्ध हो जाते, तो फिर उन का विवेक उन्हें पापी न ठहराता। 3 परन्तु उन के द्वारा प्रति वर्ष पापों का स्मरण हुआ करता है। 4 क्योंकि अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे। (इब्रानियों १०:१-४)

यह मेरा विश्वास है कि वो पवित्र लोग जो अपनी कब्रों से उठ खड़े हुए, ये वे लोग थे जिन्होंने उस बलिदान के मेम्ने में जिसको उन्होंने अर्पित किया था, विश्वास और भरोसा दिखाया था। जो मेम्ना बलि किया गया वह क्रूस पर मसीह के पूर्ण कार्य की ओर संकेत कर रहा था। जिस प्रकार हम पीछे मुड़कर एक बार सबके लिए मसीह के बलिदान को देखते हैं उसी प्रकार वे आगे की ओर देख रहे थे उस ओर जो भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह द्वारा इस विषय में कहा गया कि परमेश्वर अनन्त वाचा के बारे में क्या करेगा। (यिर्मयाह ३१:३१-३४) यीशु जो लोग सो गये हैं उनमें पहला फल था। (१ कुरिन्थियों १५:२०) जो पहले फल थे वह परमेश्वर को अर्पित की गई कटाई की पहले फसल थे। यह मेरा विश्वास है कि जो पवित्र जन अपनी कब्र से जी उठे उन्होंने पुनरुत्थान के बाद भी गवाही दी और उस समय वे प्रभु के साथ होने के लिए स्वर्ग चले गए। मसीह के पुनरुत्थान के बाद से सभी विश्वासी मसीह के साथ होने के लिए स्वर्ग जाते है .... "देह से अलग प्रभु के साथ"। (२ कुरिन्थियों ५:८)

प्रश्न: लूका १६ मे धनि मनुष्य और लाज़र के विषय में जो भाग है, उसमें भिखारी लाज़र स्वर्गलोक में कैसे पहुँचा?

बढ़िया सवाल! हमारे चौथे अध्ययन में जो कि नरक के विषय में सच्चाई से सम्बन्धित है हमने यह कहा था कि धनी व्यक्ति को इसलिए नरक नहीं भेजा गया कि वह धनी था बल्कि यह कि अपनी धनवानता में उसने कभी कमी को नहीं जाना और न ही लाज़र के जैसे उसके द्वारा पर पड़े अपने आस पास मौजूद लोगों की कमी को जाना। वह परमेश्वर के बगैर बहुत संतुष्ट था

जैसे आज और बहुत से लोग हैं। यीशु धनवान को दोषी नही मानता लेकिन बड़ी धन-दौलत के साथ बहुत जवाबदेही भी होती है, ठीक उसी तरह जैसे मनुष्यों के सन्सार में हमारी बदनामी और लोगों की नज़र में आना है। लाज़र एक **उद्‌हरण** था उसका जिसको मदद चाहिए थी। उसके नाम का साहित्यिक अर्थ है "परमेश्वर मेरा सहायक है"। वह भाग हमें नहीं बताता कि लाज़र स्वर्गलोक में या की गोद में कैसे पहुँचा बिना एक पाप के बदले किए गए बलिदान में भरोसा रखे, कोई भी अनन्तकाल में नहीं पहुँचा। कोई भी जन सिर्फ़ इसलिए नहीं खो गया क्योंकि वह धनी था न ही कोई जन सिर्फ़ इसलिए बचाया गया क्योंकि वह गरीब था और इस संसार में उसकी दुर्दशा थी। कुछ लोग शैतान द्वारा बहकाए गए हैं यह सोचने के लिए कि पृथ्वी पर उनकी निर्धनता के कारण दूसरी ओर उनके लिए अलग परिस्थिति होगी। जो भी कुछ मनुष्य ने इस संसार में सहा है उस कारण से परमेश्वर उस मनुष्य के पाप क्षमा नहीं करेगा। मसीह के क्रूस का मार्ग ही एकलौता मार्ग है। (प्रेरितों के काम ४:१२)

प्रश्न: क्या स्वर्ग में हमारे प्रिय जन सचमुच में नीचे "हमें" देख सकते हैं?

बाईबिल स्पष्ट रूप से नहीं बताती कि जो लोग स्वर्ग में हैं देख पाते हैं कि पृथ्वी पर क्या होता है। यह एक संभावना है। इब्रानियों की पत्री में, उदाहरण के लिए, लिखनेवाला विश्वास के महानायकों को स्मरण करता है जो हम से पहले चले गए और अब स्वर्ग में हैं। फिर वह आगे कहता है, “इस कारण जब कि गवाहों का ऐसा बड़ा बादल हम को घेरे हुए है, तो आओ, हर एक रोकने वाली वस्तु, और उलझाने वाले पाप को दूर कर के, वह दौड़ जिस में हमें दौड़ना है, धीरज से दौड़ें।” (इब्रानोयों १२:१) वह ऐसा बताते हुए प्रतीत होता हैं कि जब हम मसीह के पीछे चलने की चाह रखते हैं तो एक अखाड़े के दर्शकों के समान के लेखक वे हमें देखते हैं और हमारा उत्साह बढ़ाते हैं। यह भी संभव है कि इब्रानियों के लेखक इस चित्र का प्रकाशन की तरह नहीं बल्कि **उद्‌हरण** की तरह प्रयोग कर रहे हैं। वह यह कह रहे है कि मसीहियों को हर पाप के भार से मुक्त होना चाहिए जो उन्हें उस दौड़ से जो उनके सामने रखी गई है दौड़ने से रोक सकती है यह स्मरण करते हुए कि और लोग इसी तरह उन से पहले चले गए हैं और यदि उन्होंने धीरज धरा तो हम भी धर सकते हैं। हम इस प्रकार की बातों के लिए कट्टर नहीं हो सकते।

कुछ लोग ऐसा मानते हैं कि वह जो हमसे पहले चले गए हैं, प्रार्थना के उत्तर पर असर डाल सकते हैं जब वह इन संतों से व यीशु की माँ मरियम से प्रार्थना करतें हैं। एक मसीही जन को कभी भी संतों से प्रार्थना करके उनकी मदद नहीं माँगनी चाहिए। हमें बताया गया है, क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। (१ तीमुथियुस २:५) सारी प्रार्थनायें परमेश्वर से ही की जानी चाहिए।

क्या हमारे पालतू जानवर हमारे साथ होंगे? क्या पालतू जानवरों के ऊपर अनन्तकाल की आशीषें हैं और जब मैं वहाँ पहुँचूँगा तो क्या मेरा पालतू जानवर स्वर्ग में होगा?

कुछ लोगों लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है विशेषकर इस बात पर ध्यान देते हुए कि जानवर हमारे परिवारों का महत्वपूर्ण भाग हो सकतें हैं। क्या एक जानवर के पास प्राण है जो कि मृत्यु के द्वार का सामना कर सकें? मैं समझता हूँ कि यह स्पष्ट है कि जानवरों के पास प्राण होता है। इस प्रकार का कथन यह सवाल पूछता है, "प्राण" शब्द से हमारा क्या तात्पर्य है? अधिकांश बाईबिल के शिक्षक "प्राण" शब्द का प्रयोग करते हैं बुद्धी, इच्छा और भावनाओं - हमारे स्वभाव का न दिखनेवाला भाग दर्शाने के लिए; एक मनुष्य का आत्मा ही है जो उसे परमेश्वर से जोड़ता है (१ थिस्सलुनिकियों ५:२३)। जानवर सोचतें है और उनके पास समझने की क्षमता होती है। मेरे पास साढे छः किलो वज़न का हा इतालियन ग्रेहाऊंड कुत्ता है। ओहाईओ में सर्दियों में जब वह बाहर बर्फ़ देखती है तो बाहर शौच करने नही जाती। हमने उसे अखबार पर शौच करना सिखाया है, जिसको हम बाद में फेंक देते है।

कई बार वह गड़बड़ कर देती है और हमें फ़र्श पर से जहाँ उसका अखबार बिछा होता है उसकी गंदगी साफ़ करनी पड़ती है। जब मैं उसे डाँटता हूँ तो वह शर्म से अपना सिर झुका लेती है। उसको पता है कि उसने गलत किया है। अगर उसके पास बुद्धी, इच्छा या भावनाए नहीं है तो उसको शर्म क्यों महसूस होती है? पशु बातें महसूस कर सकते हैं। उनके पास भावनाए हैं। जब मै पूरा दिन काम करने के बाद घर लौटता हूँ तो वह खुशी के मारे ज़ोर से चिल्लाती है और 'विन्नी द पूह' कार्टून में टिग्गर की तरह मेरे ऊपर उछलने से अपने आपको रोक नहीं पाती। मैं विश्वास नहीं कर सकता कि यह चतुर जानवर अपने शरीर की मृत्यु के आगे नहीं जाते। आईए हम वचन से एक या दो बातें देखें:

पुराने नियम में प्राण के लिए इब्रानी शब्द नेफ़ेश है। यह शब्द तब प्रयुक्त हुआ जब परमेश्वर ने जानवरों की सृष्टि की।

> 24 फिर परमेश्वर ने कहा, पृथ्वी से एक एक जाति के जीवित प्राणी, अर्थात घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और पृथ्वी के वनपशु, जाति जाति के अनुसार उत्पन्न हों; और वैसा ही हो गया। (उत्पत्ति १:२४)

नेफ़ेश शब्द का प्रयोग उत्पत्ति १:३० में भी हुआ है जहाँ हमें बताया गया है कि जो प्राणी भूमी पर चलते हैं उनके पास जीवन श्वास (नेफ़ेश) है। यह स्पष्ट है कि नेफ़ेश शब्द प्राण शब्द को बताता है क्योंकि दाऊद भजनसंहिता १६ में लिखते हुए यह कहता है, "क्योंकि तू मेरे प्राण (नेफ़ेश) को अधोलोक में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा॥" (भजन १६:१०) स्पष्ट रूप से पशु के प्राण और मानव के प्राण के बीच में बहुत सारे अन्तर हैं। पशुओं के पास मनुष्य के समान आत्मा नहीं है। क्या जानवरों को अपराध-बोध महसूस होता है जब वे गलती करते हैं? मेरे कुत्ते को तो निश्चित तौर पर होता है। क्या उनके पास विवेक है? मुझे नहीं पता, पर मुझे ऐसा नहीं लगता। यह संभव है कि विवेक मनुष्य की आत्मा का हिस्सा है क्योंकि वचन बताता है कि मनुष्य तीन चीज़ो से मिलकर बना है - देह, प्राण और आत्मा। (१ थिस्सलुनिकियों ५:२३) फिर भी यह मुझे साफ़ दिखाई देता है कि किसी न किसी प्रकार से पशु परमेश्वर के प्रेति उत्तर्दायी हैं उन कामों के लिए जो वे इस जीवन में करते हैं। उत्पत्ति, अध्ययन ९ के भाग में, परमेश्वर यह कहता है:

> और निश्चय मैं तुम्हारा लोहू अर्थात प्राण का पलटा लूंगा: सब पशुओं, और मनुष्यों, दोनों से मैं उसे लूंगा: मनुष्य के प्राण का पलटा मैं एक एक के भाई बन्धु से लूंगा। (उत्पत्ति ९:५)

परमेश्वर क्यों जानवरों से लेखा लेगा यदि उनके जीवन मृत्यु पर ही समाप्त हो जाते हैं? यदि हर पशु के लिए लेखा होना है तो यह समझना उचित लगता है कि वे मृत्यु से बचकर इस शरीर की दुनिया से आगे जिएँगे। यदि नहीं, तो परमेश्वर उन्हें उत्तरदायी क्यों ठहराएगा? हम जानते हैं कि घोंड़ों के बारे में यह कहा गया हैं कि घोड़े स्वर्ग में होंगें क्योंकि हमें बताया गया है कि यीशु और स्वर्ग की सेनाओं के साथ सफ़ेद घोड़े भी आएँगें।

> 11 फिर मैं ने स्वर्ग को खुला हुआ देखा; और देखता हूं कि एक श्वेत घोड़ा है; और उस पर एक सवार है, जो विश्वास योग्य, और सत्य कहलाता है; और वह धर्म के साथ न्याय और लड़ाई करता है। 12 उस की आंखे आग की ज्वाला हैं: और उसके सिर पर बहुत से राजमुकुट हैं; और उसका एक नाम लिखा है, जिस उस को छोड़ और कोई नहीं जानता। 13 और वह लोहू से छिड़का हुआ वस्त्र पहिने है: और उसका नाम परमेश्वर का वचन है। 14 और स्वर्ग की सेना श्वेत घोड़ों पर सवार और श्वेत और शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे पीछे है। (प्रकाशित वाक्य १९:११-१४)

मैं नहीं समझता कि स्वर्ग में यहाँ-वहाँ जाने के लिए घोड़ों की ज़रूरत पड़ेगी, इसलिए मैं सोचता हूँ कि यह सोचना उचित ही है कि वे केवल प्रेम से कारण ही वहाँ होंगे। जैसा हमने पहले ही कहा है, बाईबिल बताती है कि परमेश्वर के पृथ्वी पर उतरने के बाद सृष्टि का पूरा क्रम बदल जाएगा। छोटे बालक सिंहों और साँपों से खेलेंगे और उन्हें किसी से भी हानी न होगी। (यशाया १२:८) अगर यह पृथ्वी के लिए बिलकुल सच है तब हम क्यों सोचते हैं कि स्वर्ग कुछ अलग होगा? मैं बिलकुल यकीन करता हूँ कि हम स्वर्ग में अपने पालतु जानवरों को देखेंगें। अपने प्रिय पालतू जानवरों के बगैर मैं स्वर्ग की कलपना भी नहीं कर सकता।

उन लोगों का क्या होता है जो आत्महत्या करते हैं?

हमें दस आज्ञाओं में बताया गया है कि तुम घात न करना (निर्गमन २०:१३) हम अपने आपके नहीं हैं। (१ कुरिन्थियों ६:२०), तो हम किस अधिकार से अपना जीवन छीन लेते हैं? हम में से हर एक को किसी कारण से सृजा गया है और हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम अपने जीवन को खत्म कर लें और अगर हम ऐसा करते हैं तो हम पर न्याय होने का खतरा है। मैं यह भी कहना चाहुँगा, परमेश्वर हमारे विचारों और इरादों को जानता है और क्यों लोग एकदम से अपने जीवन को समाप्त कर लेते हैं। वह अपना न्याय चुकाने में बिलकुल सिद्ध हैं, इसलिए हमारे लिए यह न्याय करना गलत होगा कि अनन्तकाल में लोग कहाँ जायेंगें यदि वे आत्महत्या करते हैं। मैं इसका उत्तर नहीं दे सकता केवल यह कह सकता हूँ कि मैं उस परमेश्वर पर विश्वास करता हूँ जिसे हर व्यक्ति के इरादों का पूरा ज्ञान है और जो हर एक का व्यक्तिगत तौर पर न्याय करेगा।

जो लोग मर गए हैं क्या उनसे बात करना ठीक है? क्या वे हम से बात कर सकते हैं या सपनों में या दर्शनों में हमारे पास आ सकते हैं?

मैं विश्वास करता हूँ कि अनन्त प्राण के लिए यह बहुत ही गलत और अति भयंकर बात है कि वह देह से अलग हुई आत्माओं से सम्पर्क रखें।

> 10 तुझ में कोई ऐसा न हो जो अपने बेटे वा बेटी को आग में होम करके चढ़ाने वाला,
> वा भावी कहने वाला, वा शुभ अशुभ मुहूर्तों का मानने वाला, वा टोन्हा, वा तान्त्रिक, 11
> वा बाजीगर, वा ओझों से पूछने वाला, वा भूत साधने वाला, वा भूतों का जगाने वाला हो।
> 12 क्योंकि जितने ऐसे ऐसे काम करते हैं वे सब यहोवा के सम्मुख घृणित हैं; और इन्हीं

> घृणित कामों के कारण तेरा परमेश्वर यहोवा उन को तेरे साम्हने से निकालने पर है। (व्यवस्थाविवरण १८:१०-१२)

पेशनगोई/ शकुन विचार या भविष्यकथन क्या है?

शकुन विचार लातीएन शब्द डीवीनैर, जिसका अर्थ है - आगे देख पाना, किसी देवता से प्रेरित होना। एक प्रश्न में या परिस्थिति में मनवीय तरिके या प्रथाओं से अन्तर्दृष्टि पाने की कोशिश को आलौकिक कहते हैं। पेशनगोई करने वाले अपने बयान को चिन्ह, घटनाओं या शगुन को पढ़ने के द्वारा या किसी आलौकिक शक्ति के साथ सम्पर्क में आने के द्वारा निश्चित कराते हैं।

एक माध्यम या औघड़ क्या है?

वचन में "भूत साधने वालों" और "ओझाओं" शब्द का इस्तेमाल उस व्यक्ति के लिए किया है जो उन आत्माओं के साथ सम्पर्क में रेहता है जो शरीर से अलग हो चुके हैं। (biblegateway.com वचन में पन्द्रह घटनाओं को उजागर करती हैं) यह दुष्ट आत्माएँ झूठ में ऐसी दिखती हैं जैसे वे परिवार के मृत प्रिय जन हैं, जिस कारण से इनको जानी-पहचानी आत्माएँ कहा जाता है (जैसे परिवार में) अमरीकी-इनडियन संस्कृति में, एक व्यक्ति अपने पूर्वजों को बुलाता था कि आगे की दुनिया से दिशा पा सके। हांलाकि ये आत्माँए उन परिवारों से नहीं हैं जो मर चुके हैं बल्कि शैतान द्वारा दी गई किसी परिवार के लिए वे दुष्ट आत्माँए हैं जो इस बात का ध्यान रखती हैं कि उन लोगों को अंधकार भरी, न दिखाई देनेवाली दुष्ट ताकतों का गुलाम बना कर रखें। कई सारी एशियाई संस्कृतियों में "पूर्वज" अपनी शांति के लिए बलिदानों को माँगते थे लेकिन असल में यह बलिदान दुष्ट आत्माओं के लिए किए जाते थे न कि परिवार के उन सदस्यों के लिए जिनकी मृत्यु हो गयी थी:

> उन्होंने पिशाचों के लिये जो ईश्वर न थे बलि चढ़ाए, और उनके लिये वे अनजाने देवता थे, वे तो नये नये देवता थे जो थोड़े ही दिन से प्रकट हुए थे, और जिन से उनके पुरखा कभी डरे नहीं। (व्यवस्थाविवरण ३२:१७)

शाऊल राजा का एक भूतसिद्धि करने वाली/माध्यम के साथ सामना

जब परमेश्वर के चुने हुए जन राजा, दाऊद को मारने में राजा शाऊल ने अपना पूरा जीवन लगा दिया तब उसके जीवन में ऐसा समय आया कि न तो प्रार्थना के द्वारा और न ही भविष्यद्वाणी

के शब्दों के द्वारा परमेश्वर ने उसका निर्देश्न किया। हताशा के स्थान पर होने से, उसने बहुत भयंकर कदम उठाया कि वह एक भूतसिद्धि करने वाली/माध्यम से उत्तर पाएगा जो कि एक आत्मा से पूछेगी। शमूएल भविष्य्द्वक्ता कुछ समय पहले मर चुका था और राजा शाऊल माध्यम के पास गया और उससे पूछा कि क्या वह शमूएल की आत्मा को बुला लाएगी?

> 11 स्त्री ने पूछा, मैं तेरे लिये किस को बुलाऊ? उसने कहा, शमूएल को मेरे लिये बुला। 12 जब स्त्री ने शमूएल को देखा, तब ऊंचे शब्द से चिल्लाई; और शाऊल से कहा, तू ने मुझे क्यों धोखा दिया? तू तो शाऊल है। 13 राजा ने उससे कहा, मत डर; तुझे क्या देख पड़ता है? स्त्री ने शाऊल से कहा, मुझे एक देवता पृथ्वी में से चढ़ता हुआ दिखाई पड़ता है। 14 उसने उस से पूछा उस का कैसा रूप है? उसने कहा, एक बूढ़ा पुरूष बागा ओढ़े हुए चढ़ा आता है। तब शाऊल ने निश्चय जानकर कि वह शमूएल है, औंधे मुंह भूमि पर गिर के दण्डवत किया। 15 शमूएल ने शाऊल से पूछा, तू ने मुझे ऊपर बुलवाकर क्यों सताया है? शाऊल ने कहा, मैं बड़े संकट में पड़ा हूं; क्योंकि पलिश्ती मेरे साथ लड़ रहे हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया, और अब मुझे न तो भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा उत्तर देता है, और न स्वपनों के; इसलिये मैं ने तुझे बुलाया कि तू मुझे जता दे कि मैं क्या करूं। (१ शमूएल २८:११-१५)

इस भाग में कौनसी बात आपका ध्यान आकर्षित करती है और वह स्त्री डर के मारे क्यों चिल्लाई?

आप सोच रहे होंगे कि मैं इस भाग की ओर इशारा कर क्यों रहा हूँ? इसके लिए मुझे १२ पद बहुत रूचीकर लगा: यह स्पष्ट है कि स्त्री ने वह नहीं देखा जो वह सामान्य तौर पर देखा करती थी। वह बिलकुल उस आत्मा को देख कर चौंक गई जो उसके सामने आई और उसी क्षण जान गई कि जो उससे पूछ रहा था वह शाऊल था जिसने पहले ही देश में से सारे माध्यमों को निकाल दिया था (१ शमूएल २८:३) उसने ऐसा क्या देखा था जिससे वह चौंक गई? मेरा मानना है कि वह सचमुच में शामूएल था और न कि, एक दुष्ट आत्मा जो मृत व्यक्ति की तरह व्यवहार करती है जिसकी वो अपेक्षा कर रही थी। शमूएल ने शाऊल को बताया कि कल वह अपने पुत्रों के साथ मर जाएगा और परमेश्वर युद्ध में पलिश्तियों को विजय देगा, शायद शाऊल को पश्चाताप का एक और मौका देने के लिए इससे पहले कि वह परमेश्वर के सामने न्याय के लिए खड़ा हो।

जब लोग आत्मा बुलाने के लिए एकत्रित होते हैं, यदि सचमुच में वास्तविक आतमिक सामना होने को हो, तो वह परिवार से चले गए शख्स के साथ नहीं होता है। मेरा विश्वास है कि जानी-पहचानी आत्मायें दुष्ट-आत्माँए हैं। अपने छलाव के वेष में यह दुष्ट-आत्माँए धोखा देनेवाली हैं क्योंकि उन्हें उस प्रिय जन जिसकी मृत्यु हो गई है और दूसरा जो अब भी पृथ्वी पर है के बीच के घनिष्ठ सम्बन्धों का ज्ञान है। यदि आपने आत्मा को बुला कर दुष्ट-आत्माओं से पूछने का अभ्यास किया है, तो उन्होंने अल्ग-अलग रीति से किसी व्यक्ति के जीवन में आने के रास्ते बना लिए हैं। मेरी सलाह यह है कि आप मध्यस्थ की प्रार्थना करनेवाले समूह के कुछ लोगों के साथ मिलकर पश्चात्ताप और अंगीकार के द्वारा सारे आत्मिक समझौता और बंधनो को तोड़ दें और सारे दुष्ट-आत्मा के प्रभाव को न कह दें।

क्या मृत्यु के पश्चात देह का जलाया जाना परमेश्वर वचन के अनुसार स्वीकार्य है?

हमारा परमेश्वर सृष्टि का परमेश्वर है। मैं प्रभु के लिए जिसने अपने मुँह के रचनात्मक शब्दों से सृष्टि को रचा, मुशकिल नही मनाता कि वह दफ़नाई गई देह को जिलाई गई देह दे दे। क्या परमेश्वर के लिए कोई भी बात बहुत कठिन है? (यिर्मायाह ३२:२७)। मध्य युग के दौरान जब महामारी के कारण युरोप की लगभग एक-तिहाई जनसंख्या मिट गई मुझे पक्का यकीन है कि उनमें कई सारे परमेश्वर के संत थे जिनकी देह जलाई गई ताकि महामारी का अंत किया जा सके। हम जानते हैं कि कई सारे संतो को यीशु की गवाही देने के कारण जलाया गया। इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि मनुष्य की देह किस दशा में हैं जब परमेश्वर अपने पुनरुत्थान की सामर्थ में कार्य करता है। हमारे शरीर की धूल, चाहे वह राख ही क्यों न हो सिर्फ़ पुर्नस्थापित ही नहीं बल्कि स्वर्गीय देह में सृजी जाएगी। (१ कुरिन्थियों १५:४४)

क्या हम स्वर्ग में इस संसार में जीए जीवन को याद रख पाँएगे?
बिलकुल! यीशु लूका १६:२५ में अब्राहम और धनी व्यक्ति के बीच की बातचीत के बारे में बतातें हैं जहाँ अब्राहम कहतें हैं - "परन्तु इब्राहीम ने कहा; हे पुत्र स्मरण कर, कि तू अपने जीवन में अच्छी वस्तुएं ले चुका है, और वैसे ही लाजर बुरी वस्तुएं: परन्तु अब वह यहां शान्ति पा रहा है, और तू तड़प रहा है।" (लूका १६:२५) बहुत सी बातें हम पृथ्वी पर सीखते हैं जो कि स्वर्ग या नई पृथ्वी में नहीं सीखी जा सकतीं। मैं यह विश्वास नहीं कर सकता कि जो सबक हमने सीखे हैं अपने पापी स्वभाव पर जीत पाने के लिए, वे हमें याद नही रहेंगे और स्वर्ग में हमारे चरित्र का हिस्सा नहीं रहेंगे। मेरे पाप का पुराना जीवन आज मेरे चरित्र को बनाता है, क्योंकि मुझे वहाँ जाने में डर लगता है जब मैं याद करता हूँ कि किस प्रकार पाप ने मेरे जीवन पर पकड़ बना ली थी।

यह हम सबके लिए अच्छा है कि हम सोचें कि मसीह के साथ अपने सम्बन्ध के बाहर हम कैसे जन थे और उसकी बचाने वाली सामर्थ के बारे में जो हमारे जीवनों में है। हमारी यादें हमारे चरित्र को बनाती है। हालांकि मैं विश्वास करता हूँ कि आगे भी बदलाव होता है जब हम प्रभु के साथ होने के लिए जाते हैं। (हम हमेशा, हमेशा के लिए तारों के समान चमकेंगे - दानिएल १२:३) मेरा मानना है कि हमारा चरित्र एक हद तक हमारी अनंतकाल की पहचान में दिखता है। यही है जो सबको विशेष बनाता है। हमारे चरित्र का बनना बड़ी कीमत के साथ आता है और परमेश्वर के लिए बहुमूल्य है। अपनी पुस्तक "हैवन" में लेखक रैंडी एल्कार्न इस संसार में हमारे जीवनों को याद करते हुए इन शब्दों को कहते हैं:

एक लेखक दावा करता है: हम इस पुराने संसार को जिसे हम पृथ्वी कहते हैं याद भी नहीं करेंगे .... न ही इसको ध्यान रखेंगे। यह हमारी सोच में आएगी ही नहीं।" यह गलत धारणा लोगों को असमंजस में डालती है। वे सोचतें हैं कि हम अपने सांसारिक जीवन को याद नहीं करेंगे, जिसमें वे सम्बन्ध भी हैं जो हमारे लिए बहुत मूल्य रखते हैं। यह सोच कि हम अपने वर्तमान जीवन का स्मरण नहीं करेंगे अक्सर यशायाह ६५:१७ की समझ से आता है, "क्योंकि देखो, मैं नया आकाश और नई पृथ्वी उत्पन्न करने पर हूं, और पहिली बातें स्मरण न रहेंगी और सोच विचार में भी न आएंगी।" जबकि इस पद को संदर्भ में देखा जाना चाहिए। यह पहले वाली पद से जुड़ी है जिसमें परमेश्वर कहता है, "उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।" (यिर्मयाह ३१:३४) इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर चुनाव करता है कि वह हमारे बीते पापों को हमारे विरुद्ध पकड़े नहीं रहेगा।

हमारे पास अनन्तकाल के विषय में बहुत सारे प्रश्न हैं जिनके उत्तर केवल मृत्यु के उस पार दिए जायेंगे। कई सारी बातें हैं जो अभी हमारी समझ से परे हैं। उदाहरण के लिए, क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अनन्तकाल हमेशा तक चलता रहेगा या आसमान और अंत्रिक्ष अनंतकाल में फैलता रहेगा? यदि नही है तो क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि अंत्रिक्ष की सीमा क्या होगी और उस सीमा के आगे क्या होगा? मैं मानता हूँ कि परमेश्वर ने हमें सत्य दिया है जैसा हम अभी समझ सकते हैं, लेकिन बहुत कुछ है जो वह हमारे साथ अनन्तकाल में बाँटने के लिए इंतज़ार कर रहा है।

यहाँ के बाद क्या है इस विषय में बहुत सारे सवाल हैं जिनका उत्तर बाईबिल नहीं देती। मैं सोचता हूँ एक कारण एक लड़के की कहानी द्वारा समझाया गया है जो कि पालक के कटोरे के पास बैठा है जबकि मेज़ के कोने पर चॉकलेट केक है। उस पालक को खाना उसके लिए मुश्किल होगा जबकी उसकी आँख केक पर है। और यदि प्रभु हमें वह सब कुछ बता देता जो हमारे जीवन में होनेवाला है, तो मैं समझता हूँ कि हम भी यहाँ पालक खाते हुए मुश्किल का समना करते। (वेन्स हैवनर)

प्रार्थना: प्रभु हम तेरा धन्यवाद करते हैं तेरे आश्वासन के लिए जो तूने हमें दिया है जब तूने हमें बताया कि तू हमारे लिए स्थान तैयार करने को गया है। यदि तू हमारे लिए स्थान तैयार कर रहा है, तो हम जानते हैं कि तू हमें घर ले जाएगा। चाहे जो भी आगे है, हम तुझ पर भरोसा करते हैं। हम जानते हैं कि तू अद्भुत सृष्टिकर्ता है और जो तूने हमारे लिए तैयार किया है हम उसकी कलपना का आरम्भ भी नहीं कर सकते। हमारी सहायता कर, प्रभु कि हम अपने जीवनों को अनन्तकाल की ज्योति में जी सकें।

Keith Thomas
Email: keiththomas7@gmail.com
Website for similar studies: www.groupbiblestudy.com